सभी विषय इन्हीं पुरुषार्थ चतुष्टय के अन्तर्गत हैं । मानव समाज का सम्पूर्ण हित इसी में समाहित है । भारतीय संस्कृति का यह जीवन-दर्शन विश्व का अकेला और अनुपम दर्शन है, जिसमें जीवन के प्रति यदि मोह है तो योग भी है, बन्धन है तो मुक्ति भी है, आसक्ति हैं तो त्याग भी है । इस प्रकार भारतीय जीवन दर्शन में भौतिकता एवं सांसारिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी संगम है । नियम एवं संयम पूर्वक पुरुषार्थ की नियोजना व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित एवं संतुलित आधार प्रदान करने के लिए की गयी थी । यदि पृथक-पृथक रूप से पुरुषार्थ-चतुष्टय पर दृष्टि डाली जाये तो इनमें से धर्म वह पुरुषार्थ है जिसके मूल में ही अन्य तीनों पुरुषार्थों की प्रवृत्ति समाहित है । क्योंकि धर्म से रहित अर्थ, काम और मोक्ष की पुरुषार्थता असम्भव है । धर्म प्रवृत्तिमूलक तथा निवृत्तिमूलक के भेद से दो प्रकार का होता है । धर्म जब प्रवृत्तिपरक होता है तो इस से आगे के दो पुरुषार्थ अर्थात- अर्थ और काम अपनी पुरुषार्थता को प्राप्त करते हैं तथा जब यह निवृत्तिपरक होता है तो मोक्ष नामक परमपुरुषार्थ का प्राकट्य होता है, प्रादुर्भाव होता है ।

****

संदर्भ :-

1. उत्थाने च सदा पुत्र प्रयतेथा युधिष्ठिर । न ह्यत्थानमृते देवं राज्ञामर्थप्रसिद्धये ॥
साधारणं द्वयं ह्येतदैवमुत्थानमेव च । पौरुषं हि परं मन्ये दैवं निश्चित्यमुच्यते ॥ महा. शान्ति अ. 56. 14-15
2. वामन शिवराम आप्टे के द्वारा रचित संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, पृ.सं. 489
3. यतो अभ्युदयनि:श्रेयससिद्धिः स धर्मः । वैशेषिक सूत्र. 1/1/1
4.आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च । तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः ॥ मनुस्मृति . 108
5. श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः । संकल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम् ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति 1/7
6.धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः। यस्माद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥ महा. कर्ण अ. 69/59
7.ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त, यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् । दिवो धर्मन्धरूणे सेदुषो नृञ्जातैरजातां अभि ये ननक्षुः॥ ऋग्वेद 5/16/ 2
8.धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति । धर्मेण पापमपनुदन्ति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम् तस्माद धर्मं परमं वदन्ति तैत्तिरीयारण्यकम् 10/63
9.तस्माद् धर्मप्रधानेन भवितव्यं यतात्मना । तथा च सर्वभूतेषु वर्तितव्यं यथात्मनि ॥ महा. शान्ति अ. 167/9
10. धारणाद् धर्ममित्याहुर्धर्मेण विधृताः प्रजाः। यः स्याद् युक्तः स धर्म इति निश्चयः॥ महा. शान्ति अ. 109/11
11. सदाचारः स्मृतिर्वेदास्त्रिविधं धर्मलक्षणम । चतुर्थमर्थमित्याहुः कवयो धर्मलक्षणम् ॥
अपि ह्युक्तानि धर्याणि व्यवस्यन्त्युत्तरावरे । लोकयात्रार्थमेवेह धर्मस्य नियमः कृतः ॥ महा. शान्ति अ. 259/ 3-4
12 . यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मनः कर्म पूरुषः । न तत् परेषु कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः ॥ महा. शान्ति अ 259/20
13. धर्मेवर्धतिवर्धन्तिसर्वभूतानिसर्वदा । तस्मिन् ह्रसति ह्रीयन्ते तस्माद् धर्मं न लोपयेत् ॥ महा. शान्ति अ . 90/17 14. अद्रोहेणैव भूतानामल्पद्रोहेण वा पुनः। या वृत्तिः स परो धर्मस्तेन जीवामि जाजले ॥
सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः। कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ॥ महा. शान्ति अ . 262/6 ,9
15. न नो रास्व सह स्रवत् तोकवत् पुष्टिमद् वसु । द्युमत् अग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठं अनुपक्षितम्॥ ऋग्वेद 3/13/7
16. वृत्तिमूलम् अर्थः अर्थमूलो धर्म कामौ । चाणक्य सूत्र. 1/89-90
17 . "यतः सर्वप्रयोजन सिद्धिः सोऽर्थः । नीतिवाक्यामृत . 2/1
18 . महा. शान्ति अ . 167 /11 – 14
19 . महा. शान्ति अ . 8 /16-20
20 . कृशार्थः कृशगवः कृशभृत्यः कृशातिथिः । स वै राजन् कृशो नाम न शरीरकृशः कृशः ॥ महा. शान्ति अ. 8/24
21 . "धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत्" अर्थशास्त्र . 17
22 . कामस्तदग्रे समवर्ततताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् । सतो बन्धुमसति निरभिन्दन् हृदा प्रतीच्या कवयो मनीषा ॥10.129/4
23 . महा. शान्ति अ . 37 /167
24 . संहारकाले परिदग्धकाया ब्रह्माणमायान्ति सदा प्रजा हि।
चेष्टात्मनो देवगणाश्च सर्वे ये ब्रह्मलोकादपराः स्म तेऽपि ॥
प्रजाविसर्गं तु सशेषकाले स्थानानि स्वान्येव सरन्ति जीवाः।
निःशेषस्तत्पदं यान्ति चान्ते सर्वे देवा ये सदृशा मनुष्याः ॥ महा. शान्ति अ. 280 /51-52
25. यथोर्णनाभिःपरिवर्तमान-स्तन्तूक्षये तिष्ठति पात्यमानः ।
तथा विमुक्तः प्रजहाति दुःखं विध्वंसते लोष्ट इवाद्रिमूर्च्छन् ॥
यथा रुरुः शुङ्गमथो पुराणं हित्वा त्वचं वाप्युरगो यथा चा
विहाय गच्छत्यनवेक्षमाण-स्तथा विमुक्तो विजहाति दुःखम् ॥ महा. शान्ति अ. 219/47-48
26. यथार्णवगता नद्यो व्यक्तीर्जहति नाम च । नदाश्च ता नियच्छन्ति तादृशः सत्त्वसंक्षयः ॥ महा. शान्ति अ. 219/42
1 . महाभारत महर्षि वेद व्यास शांतिपर्व डॉ पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर स्वाध्याय-मण्डल,भारत मुद्रणालय किल्ला पारडी जिला बलसाड गुजरात 1971
2 . महाभारत महर्षि वेद व्यास गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण सम्वत् 2078
3 . ऋग्वेद सहिंता भाग - 4 पं श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि, मथुरा संस्करण 2013
4. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली
5. मनुस्मृति मनु अनुवादक शिवराज आचार्य कौण्डिन्नयायनः चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी संस्करण 2016
6. याज्ञवल्क्यस्मृतिः महर्षि याज्ञवल्क्य हिंदीव्याख्याकार डा गङ्गासागरराय चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली संस्करण 2011
7. अर्थशास्त्र कौटिल्य व्याख्याकार वाचस्पति गैरोला चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी संस्करण 1996

डिजिटल युग : हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति पर प्रभाव

डॉ.राकेश कुशवाहा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
सेंट अलॉयसियस इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी,गौर,जबलपुर,म.प्र
rakeshkushwaha0761@gmail.com

शोध सारांश -डिजिटल युग ने हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के स्वरूप, प्रसार तथा अभिव्यक्ति में व्यापक परिवर्तन किए हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ब्लॉग, ई-पत्रिकाएँ, ई-पुस्तकें और डिजिटल मंचों के माध्यम से हिन्दी का वैश्विक विस्तार हुआ है। आज हिन्दी केवल मुद्रित माध्यम तक सीमित न रहकर डिजिटल संवाद की सशक्त भाषा बन गई है। इससे नए लेखकों को मंच मिला है तथा पाठक और लेखक के बीच सीधा संवाद संभव हुआ है।

डिजिटल माध्यमों ने साहित्यिक विधाओं को भी नया रूप दिया है। लघुकथा, ब्लॉग लेखन, वेब-कविता और डिजिटल कहानी जैसी नई प्रवृत्तियाँ उभरी हैं। साथ ही, ऑडियो-बुक, पॉडकास्ट और वीडियो सामग्री ने साहित्य को बहु-आयामी बनाया है। हालांकि, रोमन लिपि का बढ़ता प्रयोग, भाषा की शुद्धता में कमी और अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक मिश्रण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।संस्कृति के क्षेत्र में डिजिटल युग ने लोकसंस्कृति, परंपराओं और सांस्कृतिक आयोजनों को वैश्विक मंच प्रदान किया है। डिजिटल अभिलेखन से सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण संभव हुआ है। इस प्रकार, डिजिटल युग हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के लिए अवसर और चुनौतियाँ—दोनों लेकर आया है, जिनका संतुलित उपयोग आवश्यक है।

मुख्यशब्द : डिजिटल युग, हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य, संस्कृति, सोशल मीडिया, डिजिटल माध्यम

भूमिका-इक्कीसवीं सदी को डिजिटल युग के रूप में पहचाना जाता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म ने न केवल हमारे सोचने, समझने और संवाद करने के तरीकों को बदला है, बल्कि भाषा, साहित्य और संस्कृति की संरचना को भी नए आयाम प्रदान किए हैं।

हिन्दी भाषा, जो लंबे समय तक पुस्तकों, पत्रिकाओं और मौखिक परंपराओं के माध्यम से विकसित होती रही, आज डिजिटल माध्यमों में सक्रिय उपस्थिति दर्ज करा रही है। डिजिटल युग ने हिन्दी साहित्य को नए पाठक दिए हैं और हिन्दी संस्कृति को वैश्विक मंच प्रदान किया है। साथ ही, यह युग कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है, जैसे भाषा की शुद्धता, साहित्यिक गुणवत्ता और सांस्कृतिक मौलिकता का संकट।

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य डिजिटल युग में हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना तथा इसकी संभावनाओं और चुनौतियों को रेखांकित करना है।

डिजिटल युग की संकल्पना और विशेषताएँ-डिजिटल युग आधुनिक मानव सभ्यता का वह चरण है जिसमें सूचना, संचार और ज्ञान का आदान-प्रदान डिजिटल तकनीकों के माध्यम से तीव्र, सरल और व्यापक रूप में होने लगा है। यह युग मुख्यतः कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम है। डिजिटल युग ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों—शिक्षा, व्यापार, शासन, स्वास्थ्य, मनोरंजन और सामाजिक संबंधों—को गहराई से प्रभावित किया है।डिजिटल युग की संकल्पना सूचना को डिजिटल रूप में संग्रहित, प्रसारित और विश्लेषित करने की क्षमता पर

आधारित है। इसमें समय और स्थान की सीमाएँ लगभग समाप्त हो गई हैं। आज विश्व एक 'वैश्विक गाँव' के रूप में परिवर्तित हो चुका है, जहाँ सूचनाएँ क्षणभर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच जाती हैं।

डिजिटल युग की प्रमुख विशेषताओं में तीव्र संचार प्रणाली सबसे महत्वपूर्ण है। ई-मेल, सोशल मीडिया, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और मैसेजिंग ऐप्स ने संवाद को सरल और त्वरित बनाया है। दूसरी विशेषता सूचना की सुलभता है, जहाँ इंटरनेट के माध्यम से विशाल ज्ञान कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाता है। ई-गवर्नेंस और डिजिटल भुगतान ने प्रशासन और अर्थव्यवस्था को पारदर्शी और कुशल बनाया है। ऑनलाइन शिक्षा और ई-लर्निंग ने सीखने की प्रक्रिया को लचीला और व्यापक बनाया है।

इस प्रकार डिजिटल युग ने मानव जीवन को सुविधाजनक, तेज़ और प्रभावी बनाया है। यद्यपि इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं, फिर भी यह युग प्रगति, नवाचार और वैश्विक संपर्क का प्रतीक है।

हिन्दी भाषा पर डिजिटल युग का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

डिजिटल युग ने हिन्दी भाषा को वैश्विक पहचान प्रदान की है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, वेबसाइटें, ब्लॉग, न्यूज़ पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन हिन्दी में उपलब्ध हैं। यूनिकोड तकनीक के आने से हिन्दी टाइपिंग और प्रकाशन सरल हुआ है। गूगल ट्रांसलेशन, वॉयस टाइपिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित उपकरणों ने हिन्दी के प्रयोग को और अधिक सुलभ बनाया है।

डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को हिन्दी में अभिव्यक्ति के नए अवसर दिए हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर हिन्दी में विचार, कविताएँ, कहानियाँ और लेख व्यापक रूप से साझा किए जा रहे हैं। इससे हिन्दी भाषा की जीवंतता बनी हुई है।

नकारात्मक प्रभाव

जहाँ एक ओर डिजिटल युग ने हिन्दी का विस्तार किया है, वहीं दूसरी ओर भाषा की शुद्धता पर प्रश्नचिह्न भी लगाया है। हिंग्लिश और रोमन लिपि का बढ़ता प्रयोग हिन्दी की देवनागरी लिपि को चुनौती देता है। संक्षिप्त भाषा, अशुद्ध वर्तनी और व्याकरणिक त्रुटियाँ आम होती जा रही हैं।इस प्रकार, डिजिटल युग हिन्दी भाषा के लिए अवसर और संकट— दोनों लेकर आया है।

डिजिटल युग में हिन्दी साहित्य का स्वरूप

डिजिटल युग ने हिन्दी साहित्य के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। परंपरागत पुस्तक और पत्रिका के साथ-साथ अब ई-पुस्तकें, ई-पत्रिकाएँ और वेब साहित्य सामने आए हैं। ब्लॉग लेखन ने साहित्य को व्यक्तिगत और आत्मीय स्वर दिया है।

नई साहित्यिक विधाएँ जैसे माइक्रो कविता, डिजिटल कहानी, वेब-नाटक और सोशल मीडिया साहित्य उभरकर सामने आए हैं। इंस्टाग्राम कविता और फेसबुक कहानी जैसे प्रयोग साहित्य को नई पीढ़ी से जोड़ रहे हैं।

डिजिटल माध्यमों ने साहित्य का लोकतंत्रीकरण किया है। अब प्रकाशकों की बाध्यता कम हो गई है और नवोदित लेखक सीधे पाठकों तक पहुँच सकते हैं। लेखक और पाठक के बीच संवाद संभव हुआ है, जिससे साहित्य अधिक जीवंत और समसामयिक बन गया है।

हालाँकि, डिजिटल साहित्य में गुणवत्ता, संपादन और स्थायित्व जैसे प्रश्न भी उठते हैं, जिन पर गंभीर विमर्श आवश्यक है।

डिजिटल माध्यम और हिन्दी संस्कृति

डिजिटल युग ने हिन्दी संस्कृति के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक कथाएँ और सांस्कृतिक अनुष्ठान डिजिटल रूप में संरक्षित किए जा रहे हैं। यूट्यूब और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिन्दी फिल्में, वेब-सीरीज़ और संगीत वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रहे हैं।डिजिटल माध्यमों ने प्रवासी भारतीयों को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़े रखा है। साथ ही, विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं का आपसी संवाद भी बढ़ा है।इस प्रकार, डिजिटल युग हिन्दी संस्कृति को सीमाओं से मुक्त कर वैश्विक पहचान प्रदान करता है।

चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

डिजिटल युग में हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। डिजिटल विभाजन के कारण सभी वर्गों तक तकनीक की समान पहुँच नहीं है। व्यावसायिकता के बढ़ते प्रभाव से भाषा और साहित्य का बाजारीकरण हो रहा है।

कॉपी-पेस्ट संस्कृति और त्वरित लोकप्रियता की प्रवृत्ति से मौलिकता और गहराई प्रभावित होती है। साहित्यिक गुणवत्ता बनाए रखना एक बड़ी चुनौती बन गई है।

संभावनाएँ एवं भविष्य की दिशा

डिजिटल युग में हिन्दी के लिए अपार संभावनाएँ हैं। यदि तकनीक और भाषा के बीच संतुलन बनाया जाए, तो हिन्दी वैश्विक स्तर पर और अधिक सशक्त हो सकती है। शिक्षा, शोध और रचनात्मकता के क्षेत्र में डिजिटल माध्यम हिन्दी के विकास का सशक्त साधन बन सकते हैं।

आवश्यक है कि हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति को तकनीक के साथ सजगता और जिम्मेदारी के साथ जोड़ा जाए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डिजिटल युग ने हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को नए आयाम दिए हैं। यह युग अवसरों और चुनौतियों का संगम है। यदि भाषा की शुद्धता, साहित्य की गुणवत्ता और सांस्कृतिक मौलिकता को बनाए रखते हुए डिजिटल माध्यमों का उपयोग किया जाए, तो हिन्दी न केवल जीवित रहेगी, बल्कि वैश्विक मंच पर और अधिक समृद्ध होगी।

****

संदर्भ सूची

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. नामवर सिंह – साहित्य और समाज
3. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी भाषा का विकास
4. विभिन्न हिन्दी ई-पत्रिकाएँ एवं शोध लेख
5. विश्वसनीय डिजिटल एवं शैक्षिक वेबसाइटें